जानम रहना है ज़माने से आरा कौन सा है
हमें भी देखन दे उनमें वो जाना कौन सा है
कुछ हर्ज़ नहीं वो मेरे दिल से भी ख़फ़ा हुआ
(अपनी कहो कि रहम

ग़मख़ार अपने दोस्त सई फ़रमायेंगे क्या
ज़ख़्म के भरने तलक नाख़ुन न बढ़ायेंगे क्या
बेरुख़ी अब हद से गुज़री बंदापरवर कब तलक
हम कहेंगे हाल-ए-दिल और आप फ़रमायेंगे क्या
लाग हो गर कुछ तो हम समझेंगे लगाओ
कुछ न हो जब फिर तो धोखा खायेंगे क्या
पूछते हैं "वो" ग़ालिब कौन है.
कोई बतलाओ कि हम बतलायें क्या

वो जो हममें तुममें करार था
तुम्हें याद हो कि न याद हो

वोही यानी वादा निबाह का
तुम्हें याद हो कि न याद हो

कोई रंजगुज़ार नहीं दिल में कोई ग़मगुसार नहीं
दर्द रखता हूँ मगर दिल दर्द भी ग़मख़्वार नहीं
नाज़ है जिसपे मुझे पास वो समझदार नहीं
यानी अब कुछ भी मेरी आहे-फ़ुग़ाँ-ज़ारी नहीं
हाय ज़ालिम ने किया मुझको बाहर तोड़ा
नाले तासीर नहीं नालों में तासीर नहीं
हमने चाहो दिल में रहूँ ज़ोर न छोड़ दो
फिर भी मिलता है निगाहों में ख़ुमार नहीं
ये गुनाहों पर जो है मुझ बीमार गुनाह है
क्या मुझे रोक सकेगा ये गुनाहों पे करार नहीं
किसलिये क्यों है ये जो रोना ज़ाहिर है यहाँ पर
क्या कोई बात है क्यों कोई दरबार नहीं
कौन सा ज़ख़्म है जो रख सका दरबार नहीं
इल्तिजा कौन सी है जिसका कि इज़हार नहीं

दर्द की कोई दवा जाने

अपने आंसुओं का रखवाला

उल्फ़त के कई नये पैमाने,

बन जाते हैं लोगों के अफसाने

जज़्बात से थे कहते परवाने।

क्या दर्द --- ।

जज़्बात के न हो इनसान कायल

दिल हो नहीं सकता बिस्मिल

की लेकिन क्या कैसी मंजिल

देखी न हो जिसने कभी मंजिल

वो राह मुसाफिर क्या जाने ॥१॥

आंखों से आंसू बहते हैं

हम उनको जमाने सहते हैं

दिल-ए-नाज़ुक [illegible] कहते हैं

हो जिसके दिल में [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ

मुफ्त हुए बदनाम सांवरिया तेरे लिये
दिले हजीं पे सदा ग़म की बदलियां छाई
हजार कूच में हर तरह की तेरे आई
सजाएं दिल के लगाने की सैकड़ों पाई
उठाये रंजों की दरदर की ठोकरे खाई ॥१॥
न दिल को हांथों से खोते न गैर कहलाते
गुलों में बैठ के गुलजार की हवा खाते
हमेशा पहलू में अपने कोई हसीं पाते
जमानें गैरों के सुनते न जाने जाते ॥२॥

— * —

उम्मीद क्या थी उनसे औ कर वो क्या रहे हैं
खुद ही बना रहे थे खुद ही मिटा रहे हैं
आये थे इश्क बनकर अब वह बला बने वो
खुद ही हंसा रहे थे खुद ही रुला रहे हैं
ये बेकसी की दुनिया ये बेदर्दियां आलम
दिल जल रहा है मेरा हम उठा रहे हैं
अश्कों की सदायें आई किसने कहा खुदा॥
कोई हमें बता दे क्या वो बुला रहे हैं

— * —

रंगभरी रंगभरी रंग सूँ भरी री
होरी आई प्यारी रंग सूँ भरी री
उड़त गुलाल लाल भये बादल
पिचकारिन की लगी झरी री
चोवा चंदन अरगजा
केसर गागर भरी री
मीरा कहे प्रभु गिरिधर नागर
चेरी होय पायन में परी री

---- x -

फागुन के दिन चार रे
होरी खेल मना रे
बिन करताल पखावज बाजै
अनहद की झनकार रे
बिन सुर राग छतीसूं गावै
रोम रोम रंग सार रे
सील संतोख की केसर घोली
प्रेम प्रीत पिचकार रे
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर
बरसत रंग अपार रे
घट के पट सब खोल दिये हैं
लोकलाज सब डार रे
होरी खेली पीव घर आये,
सोई प्यारी पिय प्यार रे
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर
चरण कंवल बलिहार रे.

Filmklassiks

मीरा.

किन संग खेलूँ होली
पिया तज गये हैं अकेली
माणिक मोती सब हम छोड़े
गल में पहनी सेली
भोजन भवन भलो नहीं लागै
पिया कारण भई गेली
मुझे दूरी क्यूँ हेली
बहु दिन बीते अजहूँ न आये
लग रही तालाबेली.

— x —

होली पिया बिन मोहिं न भावै
घर आँगना न सुहावै
दीपक जोय कहा करूँ हेली
पिया परदेस रहावै
नींद नहीं आवै
कब की ठाढ़ी मैं मग जोऊँ
निसदिन विरह सतावै
कहा कहूँ कछु कहत न आवै
हिवड़ो अति अकुलावै
पिया कब दरस दिखावै

होली पिया बिन लागै खारी
सुनो री सखी मेरी प्यारी
सूनो गाँव देस सब सूनो
सूनी सेज अटारी
सूनी विरहन पिव बिन डोलै
तज गइ पीव पियारी
भई हूँ या दुख कारी
अजहूँ नहीं आये मुरारी

होरी खेलत है गिरिधारी
मुरली चंग बजत डफ न्यारो
संग जुवती ब्रजनारी
चंदन केसर छिरकत मोहन
अपने हाथ बिहारी
भरि भरि मूठि गुलाल लाल चहुँ
देत सबन पे डारी
छैल छबीले नवल कान्ह संग
स्यामा प्राण पियारी
गावत चार धमार राग तहँ
दे दे कल करतारी
फाग जो खेलत रसिक साँवरो
बाढ्यो रस ब्रज भारी
मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर
मोहनलाल बिहारी

ચંદન ઉટિ ઉરે પીતાંબર કટિ લેઓને સાંવળિયા રે

કુંડળ મણિલોલા વનમાળા ગળે વિલસી હસે રે

પીનપયોધરભારવતી યુવતી આલિંગિત હરિએ

પંચમસ્વર ધરની ગોપીજન ગાતી સુરવરાંતીલીલા

([illegible])

પરિ

મનમોહન લોચનરેખણ તે ઉપજાવે કામ કુપાતે

ધ્યાતે અધિક મધુસૂદન વદના મુગ્ધ વધૂ મધુરા વે

કોઈ નિતંબિને ગુપિત સંગ ગાન કરી ચુંબિત ગાલ

રોમાંચિત કરી સરિતા ચતુરે અધરામૃત [illegible]

કોલિકલા કુતૂહલે કામુક કાલિંદી તટ ન્યાળ

હાથ ધરીને ઓઢણવાટ એકાંતે ચતુરશયા